International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 584-586

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 584-586
www.allresearchjournal.com
Received: 27-06-2015
Accepted: 29-07-2015

डॉ० शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कागंड़ा हि० प्र०।

राजेश कुमार
सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कागंड़ा हि० प्र०।

Correspondence
डॉ० शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कागंड़ा हि० प्र०।

मानवीय मूल्यों का शिक्षा में महत्व

शिवदत्त शर्मा, राजेश कुमार

भूमिका
जीवन मे सफलता का आघार वास्तव मे शिक्षा मे निहित है। शिक्षा द्वारा विकल्पों मे से उत्तम को चुनने की कुशलता विकसित होनी चाहिए उत्तम विकल्प के चयन की प्रकिया है। वास्तव में मुल्य प्रकिया आज हम पुर्णतः स्वतन्त्र रहकर और अपने हित को सर्वोपरि रख कर प्रायः विकल्प चुना करते हैं परन्तु वास्तव मे ऐसा नहीं होना चाहिए शिक्षा के द्वारा विकसित किए जाने वाले मानवीय के वारे हमारे धर्माचार्यों शिक्षाविदों मनोंवैज्ञानिको दार्शनिकों शिक्षकों व अविभावकों मे एक मत नहीं वन पाया है1। हमारी प्राचीन समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में मानवीय मूल्यों सत्य, धर्म, सादगी, त्याग, दया भाव, शालीनता, शान्ति, अहिंसा का समावेश था। इसलिए प्राचीन समय में भारत को विश्व गुरू का दजा ंप्राप्त था ।

मानवीय मूल्यों का अर्थ
मनुष्य जीवन पर्यन्त सीखता रहता है तथा उसके अनुभवों में निरन्तर अभिवृद्धि होती है जैसे–2 मनुष्य अधिकाधिक सीखता जाता है ओर परिपक्व होता है वह ऐसे अनुभव भी प्राप्त करता है जो उसके व्यवहार को निर्देशित करते है यह निर्देशन जीवन को दिशा प्रदान करते है तथा इन्हें मानवीय मूल्य कहा जाता है।

मानवीय मूल्यों की प्रकृति
मूल्यों के अर्थ में तथा उनकी प्रकृति के सम्बध मे निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते है

- मानवीय मूल्य मानव जीवन के लक्ष्यों से सम्वधित होते हैं।
- हमारा आचरण हमारे मूल्यों के द्वारा प्रेरित होता है।
- मूल्य हमारे प्रयासो को निर्देशन करते हैं जो ठीक न्यायोचित और वाछिंत है उसके सम्बध मे मूल्य भावनाओं रुचियों दृष्टिकोणों तथा विचारों प्राथमिकताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- मानवीय मूल्यों का अपना महत्व है एक अच्छा व्यक्ति ही अच्छी चीजों की पहचान कर सकता है।
- मूल्यों का निर्माण एवं संरक्षण मनुष्य का महत्वपूर्ण प्रयोजन है।
- मानवीय मूल्यों का जितना अधिक महत्व होगा, उनका जितना अधिक ध्यान रखा जाएगा उतना ही बेहतर समाज का निर्माण होगा।
- परिपूर्णता आत्मानुभूति सन्तुष्टि विकास सत्यनिष्ठा आदि मूल्यों के लक्षण हैं।

मूल्यों के लक्षण
मूल्यों मे अनेक विशेषताएँ पाई जाती हैं।

- मूल्य वस्तुओं के महत्व के वारे मे विचार है।
- सभी विचारों की भांति मूल्यों का अस्तित्व अनुभव के क्षेत्र मे नही बल्कि लोगों के मन मे होता है।
- विना तर्क के मूल्य अन्धे होते हैं, विना भावनाओं के वे अशक्त होते है तथा विना कार्यों के वे खाली होते है।
- मूल्यों का परिणात्मक व गुणात्मक आंकलन सम्भव है।

मानवीय मूल्य खोज के प्रयास

1951 के अमेरिकी शैक्षिक निति आयोग ने पब्लिक स्कूलों के लिए कुछ मानवीय मूल्य निर्धारित किए थे [2]।

जैसे – मानव व्यक्तित्व के लिए आदर
– व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी
– संस्थाओं का व्यक्ति के अधीन होना
– सामान्य सहमति
– सत्यनिष्ठा
– समानता
– भातृत्व
– आनन्द की खोज
– आध्यातमिक संवर्धन
– श्रेष्ठता के लिए आदर

मोहम्मद साहब ने मानव जाति के लिए शांति ,विनम्रता,दया, स्नेह, क्षमा, उदारता, सादगी, मेहमानदारी, त्याग, विनय, शालीनता, न्याय दृढता, साहस, वीरता, परिहास आदि मानवीय मूल्यों की शिक्षण संस्थाओं में जरूरत महसूस की गई है (मस्जिद अली खान, 1986)[3]

सांई बाबा ने मूल्य शिक्षा के अपने कार्यक्रम में पांच प्रमुख मानवीय मूल्यों पर जोर दिया है[4], सत्य धर्म शांति, प्रेम तथा अहिंसा इनके अन्दर समाहित अन्य मूल्य है मानव सेवा, सहयोग, स्वच्छता, प्रार्थना, सादा जीवन, व उच्च विचार

राम कृष्ण मिशन संस्थाएं पूरे देश में मूल्यों की शिक्षा देने के कार्यक्रमों को चलाने में रूचि लेती है, वे श्री विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित है तथा समाज सेवा सार्वभौमिक भाईचारा तार्किक नैतिक संहिता तथा मानव व्यक्तित्व के विकास पर बल देती है

चिन्मयानन्द मिशन सत्य , सही आचरण , शांति तथा प्रेम के सार्वभौमिक मूल्यों पर वल देती है[6],

प्राथमिक एंव माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, वीकानेर राजस्थान के नैतिक शिक्षा उपागम नामक प्रकाशन में पाठयक्रमों व विद्यालय कार्यक्रमों मे निम्नलिखित मानवीय मूल्यों के प्रतिबिम्वित होने को जरुरी बताया है,

सच्चाई, सहयोग, परोपकार, देशभक्ति, ब्रह्मचर्य, शुचिता, तप, ईश्वर भक्ति, सहानुभूति प्रेम दृढ निश्चय, क्षमा, मित्रता, सादगी, निर्भीकता, अनूशासन, दान, दया, धैर्य, सहिस्णुता, तत्परता, आत्मविश्वास, कर्तव्य परायणता, दुसरों का आदर, स्वावलम्वन, श्रम मे निष्ठा, त्याग की भावना, दुसरों के गुणों की प्रशंसा, समाज सेवा की भावना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उल्लेखित है कि हमारा समाज सांस्कृतिक दृष्टि से वहूलवादी है[8], तथा शिक्षा से ऐसे सार्वभौमिक व शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो लोगों की एकता व उनके समाकलन की ओर अभिमुख हो इस मूल्य शिक्षा से धार्मिक उन्माद , हिंसा, अन्धविश्वास, भाग्यवाद व रुढिवादिता समाप्त होगी शिक्षा नीति के अनुच्छेद 8.4 में शिक्षा के समाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास के लिए एक सशक्त साधन वनाने के लिए कहा गया है।

शिक्षा निति मे शिक्षा राष्ट्रीय आत्मनिर्भता की अन्तिम गारन्टी माना गया है यह भी कहा गया है[9], कि यह संवेदनशीलताओं तथा प्रत्यक्षीकरण का प्रतिकार करती है जो राष्ट्रीय संमभाव वैज्ञानिक स्वभाव मन व आत्मा की स्वतन्त्रता को सम्भव वनाते है तथा इस प्रकार सविंधान मे निहित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता तथा प्रजातन्त्र के लक्ष्यों की प्राप्ति आसान हो जाती है शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय ढॉचे पर आधारित होगी तथा भारत की उभयनिष्ठ धरोहर, प्रजातन्त्र समतावादिता, व धर्मनिरपेक्षता जैसे मूल्यों भिन्न–2 लिगों के लोगों में समानता, पर्यावरण की रक्षा, समाजिक वाधाओं की समाप्ति, छोटे परिवार के मानक स्वीकरण तथा वैज्ञानिक स्वभाव के विकास को वढावा मिल सके। शिक्षा नति मे विज्ञान शिक्षा के माध्यम से वच्चों मे पूच्छा वस्तुनिष्ठता, जिज्ञासा, सौन्दर्यात्मक संवेदनशीलता व वैज्ञानिक स्वभाव को विकसित करने की वात वल दिया गया है शिक्षा नीति की कार्ययोजना मे धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक तथा नैतिक व मानवीय मूल्यों व समाज सेवा, श्रम के प्रति आदर , छोटे परिवार के मानक मे आस्था, वातावरण संरक्षण संस्कृति वोध तथा राष्ट्रिय एकता जैसे मूल्यों विकास पर वल देने की अनुशंसा की गई है।

वी. एन. के. रेड्डी ने अपनी पुस्तक 'मैन एजुकेशन एण्ड वेल्युज ' मे निम्न प्रकार के मूल्य का उल्लेख किया है

- **भौतिक मूल्य**
- सम्पूर्ण विश्व यथार्थता का विस्तार है पृथ्वी, वायु, जल, आकाश, व अग्नि इस यथार्थता के मुख्य अवयव है।

- **आर्थिक मूल्य**

मनूश्य को जीवन के लिए भोजन की आवश्यकता होती है समस्त समाज तथा कार्यप्रणाली आर्थिक मूल्यों पर आधारित है।

- **मनौवैज्ञानिक मूल्य**

यह वह मानवीय मूल्य है जो चिन्तन भावना तथा इच्छा में व्यक्ति की सांकल्पित तथा भौतिक प्रकृति आधारित होते है इन्हें पुनः वौद्धिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य अर्थात सत्य शिव तथा सुन्दरं मे वगीकृत किया जा सकता है।

- **शिक्षात्मक मूल्यों का योगदान**

शिक्षात्मक मूल्य वे क्रियाऐं है जो शिक्षा की दृष्टि से अच्छी उपयोगी एवं मूल्यवान हों शिक्षात्मक मूल्यों से व्यक्तित्व एवं समाजिक जीवन को निम्न लिखित लाभ हो सकते है –:

- व्यावसायिक कुशलता का विकास
- चरित्र का विकास
- स्वस्थ एवं सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास
- अच्छी नागरिकता का विकास
- पर्यावरण के साथ अनुकूलन और उसका परिषकार
- व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति
- समाजिक कुशलताओं का विकास
- राष्ट्रिय एकता एवं विकास
- नेताओं तथा प्रशिक्षित कार्य कर्ताओं के आदर्श

उपरोक्त शिक्षात्मक मानवीय मूल्य जीवन में महत्वपूर्ण भुमिका निभाते है इन्ही के द्वशा व्यक्ति अपना व्यक्तित्व एवं समाजिक जीवन सफलता पुर्वक जीता है।

शिक्षात्मक मूल्य–शिक्षा–उददेश्यों के निर्धारक

शिक्षात्मक मूल्य के द्वारा उददेश्य निर्धारित किए जाते है दुसरे शब्दों मे यों कहा जा सकता है कि शिक्षात्मक मूल्य ही वस्तुतः शिक्षा उददेश्यों का रुप धारण कर लेते है रुप परिवर्तन की इस प्रकिया में कुछ आधारों पर निर्भर करना होता है जे. एस. ब्रूबेकर के अनुसार ये आधार निम्न लिखित है

- ऐतिहासिक विश्लेषण
- समाजिक जीवन का वैज्ञानिक विश्लेषण
- वच्चों और वडों की क्रिया का विश्लेषण
- मानव प्रकृति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण
- व्यक्तिगत विचार
- सामान्य विचार
- रोजगार विश्लेषण
- दार्शनिक विचार

मानवीय मूल्य उन्मुख शिक्षा की आवश्यकता

आज समाजिक नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यातमिक मूल्यों का खण्डन हो रहा है धर्म कमजोर हो रहा है शक्ति तथा ज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है राष्ट्रों का एक दुसरे पर विश्वास नही है वेइमानी, भ्रष्टाचार, करता, अनुशासन हीनता तथा अहिंसा का बोलवाला हैऐसी विकट स्थिति में शिक्षा को मानवीय मूल्य उन्मुख वनाना अत्यन्त आवश्यक है केवल मानवीय मूल्य उन्मुख ही वैयक्तिक हित , समाजिक हित, प्रेम शान्ति, सद्रभावना तथा विवेक को विकसित कर सकती है।

1. नैतिक विकास

मानवीय मूल्य उन्मुख शिक्षा, चरित्रिक एवं नैतिक विकास की वुनियाद है यह वच्चों में विनम्रता, सत्यता, सहिस्णुता, ईमानदारी, शिष्टता, सहानुभुति, भ्रातृ भाव, प्रेम, सेवा भाव, एवं त्याग जैसे गुणों का विकास कर उनमें श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण कर सकती है।

2. सांस्कृतिक विकास

मानवीय मूल्य उन्मुख शिक्षा सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भुमिका निभाती है यह संस्कृति को सुरक्षित रखती है अतः इनका पाठयक्रम में निश्चित स्थान होना चाहिए।

3. उदार दृष्टि कोण

मानवीय मूल्य उन्मूख शिक्षा व्यक्ति को गतिशील एवं जागरुक वनाती है यह उसके जीवन के प्रति उदार दृश्ठि कोण विकसित करती है इसी के कारण वह स्वार्थ त्याग कर समाज सेवा कार्या में रुचि लेने लगता है।

4. लोकतान्त्रिक गुणों का विकास

मानवीय मूल्य उन्मुख शिक्षा विद्यार्थियों में स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृभाव, न्याय एवं सहयोग जैसे लोकतान्त्रिक गुणों का विकास करने में सहायता प्रदान करती है।

5. विवादों को शान्त करना

आज के भौतिक वादी युग में मनुष्य का दृष्टि कोण भौतिक वादी हो गया है इसके परिणामस्वरुप अनेक प्रकार के विवाद पैदा होने लगे है जैसे नये और पुराने विश्वासों मे विवाद जीवन के प्राचीन एवं नवीन मूल्यों विवाद आदि इन सामाजिक और नैतिक विवादों को शान्त करने मे मानवीय मूल्य उन्मुख शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

6. मानवतावाद की वुनियाद

मानवीय मूल्य उन्मुख शिक्षा मानवतावाद की वुनियाद है यह शान्ति, सदभावना, भ्रातृत्व तथा विश्व संगठन के विकास मे सिद्ध होती हैमूल्य उन्मूख शिक्षा के अभाव से भ्रश्टाचार, शोषण, हिंसा तथा घृणा का प्रसार होता है मूल्य उन्मुख शिक्षा के अभाव में व्यक्ति आत्मा विहीन तथा ईश्वर से विमुख होता जा रहा है अराजकता का वोलवाला है। मुल्य उन्मुख शिक्षा से इन वुराइयों को समाप्त किया जा सकता है मानवीय मूल्य उन्मुख शिक्षा के सम्वन्ध मे कुछ महत्वपूर्ण विचार निम्न है–

भारतीय शिक्षा आयोग के विचार

युवा पीढ़ी के समाजिक एवं नैतिक मूल्यों के कमजोर होने से पश्चिमी देशों मे कई गम्भीर सामाजिक एवं नैतिक विवाद खडे हो रहे है कई महान पश्चिमी विचारको मे यह इच्छा पनपने लगी है कि विज्ञान एवं तकनीक द्वारा लाए गए ज्ञान तथा कौशल को नीति शास्त्र तथा धर्म के सर्वोतम मूल्य द्वारा सन्तुलित किया जाए ऐसी स्थिति मे हमारे लिए भी महत्वपुर्ण है कि हम अपनी शिक्षा पद्धति को उचित रुप से मूल्य उन्मुख वनाए।

शिक्षा की राष्ट्रीय नीति, 1986

शिक्षा की राष्ट्रीय नीति, 1986 के दस्तावेज मे निम्न वाता का उल्लेख किया गया है

- **नैतिक मूल्य**

समाज में अनिवार्य मूल्यों के पतन तथा बढती हुई मानवद्वेशी प्रवृति ने इस आवश्यकता के प्रति ध्यान आकर्षित किया है कि समाजिक और नैतिक मूल्य के प्रति दृष्टिकोण वाले पाठयक्रम का पुनः निर्माण किया जाए

- **शाश्वत मूल्य**

हमारे वहु–संस्कृति समाज में शिक्षा द्वारा शाश्वत मूल्यों का निर्माण होना चाहिए और यह मूल्य हमारी जनता के एकता के प्रति उन्मुख होने चाहिए ऐसे मूल्य उन्मुखता से दुर्वोधवाद, धार्मिक, कटरता, हिंसा, अन्धविश्वास,तथा भाग्यवाद को समाप्त करने मे सहायता मिलती है।

स्वामी दयानन्द के विचार[12,]

मानवीय मूल्य उन्मुख शिक्षा मे माता–पिता को महान तथा महत्वपुर्ण भुमिका निभानी होगी माता–पिता का कर्तव्य है कि वच्चों कों ऐसी शिक्षा दे जो भारतीय शिक्षा की प्राचीन परम्पराओं द्वारा निर्देशित हो।

निष्कर्ष

जीवन मे सफल होने के लिए जहॉ शिक्षा का अत्यधिक महत्व है साथ ही शिक्षा प्रणाली मे अधिक से अधिक मानवीय मूल्यों का समावेश करके समाज मे वढ़ रही कुरीतियों, दिखावा करने की प्रवृति, धार्मिक उन्माद, हिंसा, अन्धविश्वास, रुढ़िवादिता आदि को समाप्त करने मे सहायता मिलेगी सभी स्टेटस सिम्बल के चक्रव्यूह में फंस रहे है तथा भारतीय अनैतिकता के महौल मे दम तोड़ रही है इस भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत को वचाए रखने के लिए मानवीय मूल्य आधारित शिक्षा की अति आवश्यकता है हमें शिक्षा को इस प्रकार मूल्य युक्त वनाना होगा ताकि विद्यार्थी भविष्य के लिए सुरक्षित तैयारी कर सके जनकल्याण व राष्ट्र की प्रगति के लिए यह जरुरी है कि हम सभी इस दिशा मे अपने कर्तव्य का भली–भांति निर्वहन करे।

संदर्भ सूचि

1. शिप्रा पब्लिकेशन, डा. जै श्री ;2008द्ध दूसरा संस्करण पेज संख्या–1
2. 1951 अमेरिकी शैक्षिक नीति आयोग पेज संख्या–68
3. माजिद आली खान रिर्पोट 1986 ;मोहम्मद साहब पेज संख्या–9
4. साईं बाबा का मूल्य पर आधारित साहित्य
5. रामकृष्ण मिशन साहित्य दस्तावेज पेज –108
6. चिन्मयानन्द मिशन साहित्य
7. प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशाालय विकानेर, राजस्थान नैतिक शिक्षा उपागम प्रकाशन पेज संख्या 206
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986
9. अहमपाल पब्लिशर्जस डा. जे. एस. वालिया ;2014द्ध संस्करण पेज संख्या–239
10. वी. एन. रेड्डी की पुस्तक एजुकेशान एंड वैल्यूज़ पेज संख्या–74
11. भारतीय शिक्षा आयोग तथा विश्वविद्यालय आयोग रिर्पोट
12. स्वामी दयानंद के विचार तथा साहित्यक दस्तावेज